जलीय चक्र के अंग

वर्षण

यह वायुमंडलीय वाष्प से प्राप्त जल के उन सभी रूपों से सम्बन्धित है जो पृथ्वी की सतह पर गिरता है। वर्षण जलवाष्प के संघनन के कारण होता है। वर्षा, ओला, कुहासा, हिम आदि वर्षण के विभिन्न रूप हैं।

अपरोधन

वर्षा के जल का कुछ भाग वनस्पतियों द्वारा रोक लिया जाता है तथा शेष भूमि में प्रवेश कर जाता है। वनस्पति द्वारा रोके वर्षा के जल को अपरोधन के रूप में जाना जाता है।

अंत: स्यन्दन

वर्षा के जल का कुछ भाग भूपृष्ठ पर पहुंच कर मृदा में प्रवेश करता है। मृदा की पृष्ठ तहों तक पानी के प्रवेश तथा नीचे की ओर जाने की क्रिया को अंत:स्यन्दन कहते हैं।

अपवाह

वर्षा के जल के उस भाग को जो भूपृष्ठ अथवा भूपृष्ठ के नीचे प्रवाह के रूप में नदियों, झीलों तथा समुद्र तक पहुंचता है, अपवाह कहते हैं।

वाष्पन

जल के वाष्प के रूप में परिवर्तित·होकर वायुमंडल में जाने की क्रिया को वाष्पन कहा जाता है। जलीय चक्र में वाष्पन जल की सतह, भूपृष्ठ तथा वनस्पतियों द्वारा अपरोधित जल से होता है।

वाष्पोत्सर्जन

इस प्रक्रिया में मृदा समाहित जल पौधों द्वारा वाष्प के रूप में वायु मंडल में स्थानान्तरित होता है।

भूजल

परिरूद्ध अथवा अपरिरूद्ध मृदा के जलदायी स्तर तक संचित पानी को भूजल कहा जाता है।